IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, S.Iss 11, 2022

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का शिक्षक, शिक्षा और शिक्षार्थी पर प्रभाव

शोध छात्रा - नम्रता
फैकल्टी ऑफ एजुकेशन
तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

शोध निर्देशिका - प्रो० (डॉ०) रश्मि मेहरोत्रा (प्राचार्या)
फैकल्टी ऑफ एजुकेशन

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद उत्तर प्रदेश

संक्षेप

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया एक शिक्षा प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी सभी का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारम्भ शिक्षा क्षेत्र में क्रांति लाने का प्रयास है और त्रिध्रुवीय प्रक्रिया इस उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। इस नीति के तहत शिक्षकों को नवाचारी और सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे उन्हें शिक्षा में नई तकनीकों और मेथडों का परिचय होगा। यह शिक्षकों के प्रदर्शन को सुधारेगा और उन्हें शिक्षार्थियों के लिए बेहतर पढ़ाई और समझाने की क्षमता में सुधार करेगा। नई शिक्षा नीति शिक्षार्थियों के लिए भी बड़े परिवर्तनों का हिस्सा है। यह छात्रों को सामाजिक और आधारभूत ज्ञान के साथ-साथ नैतिक और मानविक मूल्यों को भी समझाने का प्रयास करता है। इसके अलावा, नई नीति शिक्षार्थियों के लिए नौकरी के अवसरों को बढ़ावा देने में मदद करेगी, जिससे उनके भविष्य के लिए साकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। इस त्रिध्रुवीय प्रक्रिया के माध्यम से, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती है और भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और सुदृढ़ बना सकती है। इसके परिणामस्वरूप, हमारे देश के नवे पीढ़ियों के लिए बेहतर और समर्थनशील शिक्षा का द्वार खुल सकता है।

परिचय

शिक्षा वांछित लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे शक्तिशाली स्रोत है। शिक्षा एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी और पर्यावरण (शिक्षण सामग्री) शामिल हैं। जैसा कि माध्यमिक शिक्षा आयोग या मुदलियार आयोग (1954) कहता है, "विचारित शैक्षिक पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षक, उसके व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षिक योग्यता, उसका पेशेवर प्रशिक्षण और वह स्थान है, जिस पर वह स्कूल के साथ-साथ संचार में भी कब्जा करता है। एक स्कूल की प्रतिष्ठा और समुदाय के जीवन पर इसका प्रभाव हमेशा इस बात पर निर्भर करता है कि इसमें किस तरह के शिक्षक काम कर रहे हैं। एनपीई (1986) के अनुसार, "शिक्षक की स्थिति एक समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचार को दर्शाती है। ऐसा कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है। सरकार और समुदाय को ऐसी परिस्थितियां बनाने का प्रयास करना चाहिए जो रचनात्मक और रचनात्मक लाइनों पर शिक्षकों को प्रेरित करने और प्रेरित करने में मदद करें।"बच्चों की विविध

आवश्यकताओं को संबोधित करने वाले सीखने के माहौल को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक स्वायत्तता आवश्यक है। शिक्षार्थी को जितनी जगह, स्वतंत्रता, लचीलापन और सम्मान की आवश्यकता होती है, शिक्षक को भी उतनी ही आवश्यकता होती है। एक ऐसे वातावरण को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जो शिक्षकों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों की सुविधा प्रदान करे। शिक्षक स्वायत्तता व्यक्तिगत और व्यावसायिक सुधार की आवश्यकता से प्रेरित है, ताकि एक स्वायत्त शिक्षक अपने करियर के दौरान आगे विकसित होने के अवसरों की तलाश कर सके। शिक्षक स्वायत्तता और व्यावसायिक स्वतंत्रता एक सामाजिक रूप से निर्मित प्रक्रिया है, जहां शिक्षक समर्थन और समूहों को विकसित करते हैं जो विविध ज्ञान, अनुभव, समान शक्ति और स्वायत्त सीखने के शिक्षक-शिक्षार्थी पूल के रूप में कार्य कर सकते हैं। यदि शिक्षक पेशेवर हैं, तो शिक्षक के काम की स्थिति की पुष्टि करने में स्वायत्तता एक महत्वपूर्ण तत्व है।

शिक्षा का अर्थ

सबसे बड़े अर्थ में शिक्षा कोई भी कार्य या अनुभव है जिसका किसी व्यक्ति के मन, चरित्र या शारीरिक क्षमता पर रचनात्मक प्रभाव पड़ता है। अपने तकनीकी अर्थों में, शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज जानबूझकर अपने संचित ज्ञान, कौशल और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाता है।

व्युत्पत्ति के अनुसार, "शिक्षा" शब्द व्युत्पत्ति के विभिन्न स्रोतों से पता लगाया जाता है। एक दृष्टिकोण के अनुसार, शिक्षा शब्द लैटिन शब्द "एडुको" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'मैं बाहर निकलता हूं', यहां ई का अर्थ है 'बाहर', जबकि 'डुको' का अर्थ है 'मैं नेतृत्व करता हूं', दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है 'मैं अंधेरे से प्रकाश की ओर जाता हूं' और यहां 'मैं' शिक्षक को दर्शाता है।

एक और विचार है कि 'शिक्षा' शब्द 'एडुकेयर' शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'पालन-पोषण करना', 'पालन-पोषण करना'। इस अर्थ का अर्थ है कि बच्चे की कमी है और उसे कुछ पूर्वनिर्धारित विचारों के साथ लाया जाना है। जिसके लिए, उसे उचित तरीके से ज्ञान के साथ खिलाया जाना चाहिए ताकि, बच्चा या छात्र अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपनी जन्मजात शक्ति का उपयोग कर सके, दूसरे शब्दों में, इसका मतलब है कि बच्चे को कुछ उद्देश्यों और उद्देश्यों के अनुसार लाया जाना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज विकसित करने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मौलिक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के मामले में वैश्विक मंच पर भारत के निरंतर उत्थान और नेतृत्व की कुंजी है। सार्वभौमिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया की भलाई के लिए हमारे देश की समृद्ध प्रतिभाओं और संसाधनों को विकसित करने और अधिकतम करने का सबसे अच्छा तरीका है। अगले

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

दशक में भारत में दुनिया में युवाओं की सबसे अधिक आबादी होगी, और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसर प्रदान करने की हमारी क्षमता हमारे देश का भविष्य निर्धारित करेगी। सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4) में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा, जिसे 2015 में भारत द्वारा अपनाया गया था - 2030 तक "समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना" चाहता है । इस तरह के एक उदात्त लक्ष्य के लिए पूरी शिक्षा प्रणाली को सीखने का समर्थन करने और बढ़ावा देने के लिए पुन: कॉन्फ़िगर करने की आवश्यकता होगी, ताकि सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के सभी महत्वपूर्ण लक्ष्यों और लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त किया जा सके। दुनिया ज्ञान परिदृश्य में तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रही है। विभिन्न नाटकीय वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ, जैसे कि बड़े डेटा, मशीन लर्निंग और कृत्रिम बुद्धि के उदय के साथ, दुनिया भर में कई अकुशल नौकरियों को मशीनों द्वारा लिया जा सकता है, जबकि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी में बहु-विषयक क्षमताओं के संयोजन में विशेष रूप से गणित, कंप्यूटर विज्ञान और डेटा विज्ञान को शामिल करने वाले कुशल कार्यबल की आवश्यकता है। अधिक मांग में तेजी से होगा। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों के साथ, दुनिया की ऊर्जा, पानी, भोजन और स्वच्छता की जरूरतों को पूरा करने के तरीके में एक बड़ा बदलाव होगा, जिसके परिणामस्वरूप फिर से नए कुशल श्रम की आवश्यकता होगी, विशेष रूप से जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, कृषि, जलवायु विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में। महामारियों और महामारियों के बढ़ते उद्भव के लिए संक्रामक रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में सहयोगी अनुसंधान की भी आवश्यकता होगी और परिणामस्वरूप सामाजिक मुद्दे बहु-विषयक सीखने की आवश्यकता को बढ़ाते हैं। मानविकी और कला की बढ़ती मांग होगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर बढ़ रहा है।

अध्ययन की आवश्यकता

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी पर गहरा प्रभाव होता है। यह नीति शिक्षकों को नवाचारी और सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करती है, जिससे उनका प्रदर्शन बेहतर होता है और वे अपने छात्रों को बेहतर प्रकार से सिखा सकते हैं। इस नीति के तहत, शिक्षा में नए तकनीकों और मेथडों का प्रयोग होता है, जो शिक्षार्थियों को समझने में मदद करते हैं और उनकी रूचि और रूचि को समर्थन देते हैं। इस नीति से शिक्षार्थियों को भी बड़ा लाभ होता है। नई शिक्षा नीति उनके लिए बेहतर और अधिक सहयोगी शिक्षा के अवसर प्रदान करती है, जिससे वे अपने शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं। नई शिक्षा नीति शिक्षा संविदान के माध्यम से नैतिक और मानविक मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करती है, जिससे शिक्षार्थी न केवल ज्ञान बढ़ा सकें, बल्कि उन्हें जीवन में भी अच्छे नागरिक बनने के लिए तैयारी होती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी पर सकारात्मक प्रभाव डालती है, जिससे भारतीय शिक्षा प्रणाली को मूल्यवान और प्रभावी बनाने में मदद करती है।

साहित्य की समीक्षा

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

खुशाल **(2022)** डिजिटल इंडिया अभियान पूरे देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने में मदद कर रहा है जैसा कि इस पेपर में उल्लेख किया गया है, जहां शिक्षा इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, प्रौद्योगिकी स्वयं शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी; इस प्रकार, सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी और शिक्षा के बीच संबंध द्विदिश है। शिक्षा नीति व्यक्तिगत क्षमता के विकास पर जोर देती है। प्रौद्योगिकी शिक्षा में एक द्विदिश भूमिका निभाती है।

अखिलेश, **(2022)** भविष्य की शिक्षा पर आईसीटी उपकरणों के प्रभाव और सीखने के लिए आभासी बुनियादी ढांचे के निर्माण के विभिन्न तरीकों पर चर्चा की गई है, जो स्कूल और उच्च शिक्षा में दूरस्थ और इंटरैक्टिव शिक्षा के लिए आईटीसी के अधिक उपयोग को दर्शाता है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों को ई-सामग्री और डेटा द्वारा ईंधन दिया जाता है, जो गोपनीयता, नियमों और मानकों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। डिजिटल शिक्षा प्रौद्योगिकी के नैतिक उपयोग और पर्यावरण के अनुकूल पहल को बढ़ावा देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जैसा कि श्योजी, लाल द्वारा चर्चा की गई है, शिक्षा को अधिक सुलभ, समतावादी और समावेशी बनाने पर केंद्रित है, लेकिन केवल तभी जब इसे सभी स्तरों पर ठीक से लागू किया जाए, और यह छात्रों को अपने कौशल में सुधार करते हुए अपने जुनून का पालन करने की अनुमति देता है। शिक्षा सामाजिक विकास और सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा को विश्व स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना है।

श्रीराम, गोपालकृष्णन **(2023**) अध्ययन ने स्वदेशी प्राचीन भारतीय शिक्षा ज्ञान प्रणालियों (एआईकेएस) के पूर्ववृत्त का पता लगाया। पेपर ने गुरुकुल को एक प्रभावी औपचारिक शिक्षा मॉडल के रूप में धारणा की जांच की। साथ ही, प्राचीन भारतीय शिक्षा ज्ञान प्रणालियों (एआईकेएस), समकालीन परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता और ऐसी नीति के विचार को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाता है। भारत में नई शिक्षा नीति 2020 प्राचीन ज्ञान प्रणालियों से प्रेरणा लेती है। नीति एआईकेएस असाधारणता का दावा करती है और इसका उद्देश्य भारत में शिक्षा पर दीर्घकालिक प्रभाव डालना है।

सुरेश, येनुगु और अन्य (2022) ने राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (एनईपी) का प्रस्ताव रखा, जिसका उद्देश्य व्यापक तरीके से कार्रवाई बिंदुओं की प्राथमिकता तय करके भावना और इरादे के साथ निर्धारित लक्ष्यों को चरण-वार प्राप्त करना है, जिसमें सावधानीपूर्वक योजना, निगरानी और सहयोगी कार्यान्वयन, आवश्यक धन का समय पर निवेश और कई कार्यान्वयन चरणों पर सावधानीपूर्वक विश्लेषण और समीक्षा शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के कुछ पहलू नए हैं। एनईपी के कार्यान्वयन के लिए सभी हितधारकों से प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

शीतल एट अल (2022) ने एनईपी 2020 के उचित कार्यान्वयन में चुनौतियों की पहचान की और साथ ही इसका समाधान भी ढूंढा और इन चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न उपलब्ध स्रोतों से द्वितीयक डेटा का उपयोग किया। नई शिक्षा नीति (NEP2020) में भारत की शैक्षिक प्रणाली को बदलने की क्षमता है। NEP2020 की सफलता इसके कार्यान्वयन के लिए उपलब्ध प्रतिबद्धता और संसाधनों पर निर्भर करती है।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

अंशुमन **(2022)** ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एनईपी 2020 द्वारा सुझाए गए कदमों और भविष्य की आवश्यकता के अनुसार आवश्यक समझे जाने वाले सुधारों पर विचार पर चर्चा की, उन्होंने इस बात पर भी ध्यान केंद्रित किया कि एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी) को बहु-विषयक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में कैसे लागू किया जाएगा।

पूजा दांगी, **(2022)** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जैसा कि लेखकों द्वारा चर्चा की गई है, को इस सुधार के ढांचे में बदल दिया गया है जो इस देश में एक नई शैक्षिक प्रणाली बनाने में मदद कर सकता है, इसके अलावा उन आर्थिक और सामाजिक संकेतकों को मजबूत कर सकता है जिन्हें अभी भी सुधारने की आवश्यकता है। एनईपी 2020 में व्यापक और गुणवत्ता सुधारों का प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य स्थानीय और वैश्विक दृष्टिकोण को संतुलित करना है।

आशीष एट अल(2022) आशीष द्वारा चर्चा की गई नई शिक्षा नीति 30 वर्षों के बाद भारत की मौजूदा शिक्षा प्रणाली को बदलने के लिए तैयार है, जिसका उद्देश्य इसे शिक्षाविदों के अंतर्राष्ट्रीय मानक के बराबर बनाना है, यह भारतीय मूल्यों से विकसित एक शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके और देश को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक जीवंत समाज में बदलने में सीधे योगदान देगी। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत को एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाना है। रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए शिक्षा में उन्नत प्रौद्योगिकियों को शामिल करना।

अनुसंधान समस्या

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी के बीच नए गतिशील संबंध और नैतिक मूल्यों की गहरी मान्यता है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में नैतिकता की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। इस अनुसंधान समस्या के तहत, हम यह समझ सकते हैं कि कैसे नई शिक्षा नीति ने शिक्षकों के शैक्षिक प्रदर्शन को सुधारा है। इसके अलावा, यह शिक्षार्थियों के लिए नौकरी के अवसरों को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है और उन्हें आदर्श नागरिक के रूप में तैयार कर सकती है। इस अनुसंधान समस्या के अंतर्गत हम शिक्षा के क्षेत्र में नए तकनीकों और मेथडों का प्रयोग करने के प्रभाव को भी अध्ययन कर सकते हैं, जिससे शिक्षार्थियों के लिए बेहतर समझाने का तरीका हो सकता है।

सम्प्रतः, त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव अनुसंधान में महत्वपूर्ण है, जो शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की दिशा में मदद कर सकता है और शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने में मदद कर सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुख बिंदु

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (National Education Policy) के प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. सामग्री शिक्षा का प्रमोट: नई शिक्षा नीति में सामग्री शिक्षा को प्राथमिकता दी गई है, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण और आदर्श शिक्षा को सुनिश्चित करना है।
2. अनुसंधान और नवाचार: नीति में अनुसंधान और नवाचार को प्रमोट करने के लिए विभिन्न उपायों का सुझाव दिया गया है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में नए तकनीकों और मेथडों का अध्ययन किया जा सके।

Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved**

3. योजनानुसार शिक्षा: नई नीति में शिक्षा को योजनानुसार (flexible) और अनुकूलित बनाने का प्रस्ताव है, जिससे छात्रों को अपनी रुचि और प्रतिभा के हिसाब से शिक्षा चुनने का अधिक स्वातंत्रता मिलती है।
4. उच्च शिक्षा में सुधार: नीति में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार करने के प्रस्ताव है, जिसमें शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त करने और औद्योगिक आवश्यकताओं के साथ योजनाबद्ध करने का प्रयास किया गया है।
5. भाषा शिक्षा: नीति में भाषा शिक्षा को महत्वपूर्ण रूप से देखा गया है, और यह प्रस्तावित है कि छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रयास किया जाए।
6. अधिकारिक और गैर-अधिकारिक शिक्षा: नीति में शिक्षा को अधिकारिक और गैर-अधिकारिक (informal) तरीकों से प्रमोट करने का प्रस्ताव है, जिससे शिक्षा का पहुंच और प्राप्ति बढ़ सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक प्राथमिकता और गुणवत्ता की दिशा में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

निष्कर्ष

त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे शिक्षा के सभी पहलुओं में सुधार संभव होता है। इस नीति के माध्यम से शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी सभी को बेहतर तरीके से समझाने और सीखने के लिए बेहतर माध्यम प्राप्त होते हैं। यह नीति न केवल शिक्षा क्षेत्र को सुधारती है, बल्कि समाज के नैतिक और मानविक मूल्यों को भी बढ़ावा देने का प्रयास करती है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा से जुड़े सभी तरह के लोग उनके शैक्षिक और सामाजिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सकते हैं। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को एक गुणवत्ता और समृद्धि का साधन बनाना है, और इसके माध्यम से हम अपने देश के नौजवानों को बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर करने में सहायक हो सकते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने शिक्षा प्रणाली को भी सुधारने का माध्यम प्रदान किया है, जिससे विद्यार्थियों को नौकरी के लिए बेहतर तैयारी दी जा सकती है। इस नीति के अंतर्गत, शिक्षा से जुड़े विभिन्न तरह के योजनाओं के लिए निवेश किया जा रहा है, जैसे कि विज्ञान और तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, और अध्यात्मिक शिक्षा। त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव शिक्षा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समय का प्रतीक है, जिससे हम बेहतर और समृद्ध भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकते हैं। यह नीति शिक्षक, शिक्षा, और शिक्षार्थी के बीच नए संबंध और नैतिक मूल्यों की प्रवृत्ति को समझने का माध्यम प्रदान करती है और भारतीय शिक्षा प्रणाली को बेहतर और प्रभावी बनाने में मदद करती है।

संदर्भ

- खुशाल, लिम्बराज, मुंधे। नई शिक्षा नीति – 2020 मानवता विज्ञान और अंग्रेजी भाषा के लिए विद्वानों की शोध पत्रिका, दोई: 10.21922 / srjhsel.v10i52.11531
- अखिलेश, ए., वाओ., अश्विनी, ए., वाओ। भारत में नई शिक्षा नीति: एक डिजिटल भविष्य की ओर। जर्नल ला एडुस्की, दोई: 10.37899 /
- श्योजी, लाल, बैरवा। समावेशी और गुणवत्ता आधारित उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेल्थ साइंसेज (आईजेएचएस), दोई: 10.53730/ ijhs.v6ns6.10051

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, S.Iss 11, 2022

- श्रीराम, गोपालकृष्णन। भारत में नई शिक्षा नीति 2020: भविष्य अतीत की ओर मुड़ जाता है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इन्क्लूसिव एजुकेशन, दोई: 10.1080/13603116.2023.2215785
- सुरेश, येनुगु। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी): क्या यह भारतीय उच्च शिक्षा में एक प्रतिमान बदलाव होगा? परिप्रेक्ष्य, दोई: 10.1080/13603108.2022.2078901
- शीतल, बडयाल, नीरजा, शर्मा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020): प्रतिबिंब, चुनौतियां और आगे का रास्ता। मानवता विज्ञान और अंग्रेजी भाषा के लिए विद्वानों की शोध पत्रिका, दोई: 10.21922 / srjhsel.v10i50.10174
- अंशुमन, तिवारी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: शिक्षक शिक्षा को सशक्त बनाना। Paripex इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च, दोई: 10.36106 / paripex / 7008072
- दांगी, पूजा, अरुण। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के कथित अवसर। इंडियन रिसर्च जर्नल ऑफ एक्सटेंशन एजुकेशन, दोई: 10.54986/irjee/2022/jul_sep/145-149
- आशीष, तेजस्वी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा और कृषि शिक्षा में प्रगतिशील परिवर्तन। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, दोई: 10.37648 / ijrst.v12i04.001।